RNI No. 26281/.. जि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2018-20

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 5 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 15 अप्रैल, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

12 APR 2018

वर्ष-75, अंक : 5, 12-15 अप्रैल 2018 तदनुसार 2 वैसाख सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

रस्सी की भाँति पाप को मुझसे शिथिल कर

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

वि मच्छ्रथाय रशनामिवाग ऋध्याम ते वरुण खामृतस्य।
मा तन्तुश्छेदि वयतो धियं मे मा मात्रा शार्यपसः पुर ऋतोः।।

-ऋ. २।२८।५

शब्दार्थ-मत् = मुझसे **रशनाम् + इव** = रस्सी की भाँति **आगः** = पाप-भावना को **वि+श्रथाय** = शिथिल कर दे। हे **वरुण** = वरणीय भगवन्! **ते** = तेरे ऋतस्य = ऋत की **खाम्** = डोरी को **ऋध्याम** = हम बढ़ाएँ। **मे** = मुझ **धियम्** = बुद्धि, ज्ञान, **ध्यान का वयतः** = ताना-बाना बुनने वाले का **तन्तुः** = जीवन-तन्तु **मा** = मत **छेदि** = टूटे और **अपसः** = मेरे कार्य-उद्देश्य की **मात्रा** = मात्रा **ऋतोः** = ऋतु से, समय से **पुरः** = पूर्व **मा**= मत **शारि** = टूटे।

व्याख्या-पाप-तापनाशक प्रभो! मैं तेरी शरण में आया हूँ। पाप-वासना की ज्वाला में जल रहा हूँ। प्रभो! तू ही इनको शान्त कर। नाथ! मेरे पाप की डोरी लम्बी है और इसने मुझे कसके जकड़ रखा है। मेरी आपसे विनती है-**'वि मच्छ्रथाय रशनामिवागः'** = मुझसे रस्सी की भाँति पाप की वासना ढीली कर। प्रभो! पाप से ही मैं छुटकारा नहीं माँग रहा, मैं तो पाप के मूल-वासना की वास से त्राण चाहता हूँ, अतः कृपा कर। कृपालो! मैंने सुना है कि-**'सुनीतिभिर्नयसि त्रायसे जनं यस्तुभ्यं दाशान्न तमंहो अश्नवत्'** [ऋ० २।२३।४] = जो अपना-आपा तेरे अर्पण कर देता है, उसे तू उत्तम रीति से चलाता है, उस जन की रक्षा करता है तथा उसको पाप नहीं व्यापता। और-

न तमंहो न दुरितं कुतश्चन नारातयस्तितिरुर्न द्वयाविनः।
विश्वा इदस्माद्ध्वरसो वि बाधसे यं सुगोपा रक्षसि ब्रह्मणस्पते।।

-ऋ० २।२३।५

हे महान् रक्षक! बड़ों के भी पालक प्रभो! तू उत्तम रक्षक जिसकी रक्षा करता है, उसको कहीं से भी पाप और दुर्गति प्राप्त नहीं होती। समाज-शत्रु और द्विजिह्व भी उसे दुःख नहीं दे पाते हैं। इससे सभी पीड़ाओं को तू दूर भगाता है।

अपना-आपा जिसने तुझे सौंप दिया, उसकी रक्षा तो तू स्वयं ही करेगा। मैं भी अपना-आपा तुझे सौंपता हूँ। ले ले। विपत्तारक! दुःखों से छूटने तथा तेरी रक्षा का पात्र बनने के लिए-**'ऋध्याम ते वरुण खामृतस्य'** = वरुण! हम तेरे ऋत की डोरी को बढ़ाएँ, तेरे बताये नियम के अनुसार चलें। उसके अनुसार चलते हुए-**'मा तन्तुश्छेदि वयतो धियं मे'** = तदनुसार ज्ञान= कर्म का ताना-बाना बुनते-तनते मेरे जीवन का तन्तु बीच में न कट जाए। मैं अपना उद्देश्य इसी जन्म में पूरा कर जाऊँ। **'मा मात्रा शार्यपसः पुर ऋतोः'** = मेरे कर्म की मात्रा समय से पूर्व न टूटे, अर्थात् मैं अपने कर्तव्य-कर्मों की इतिश्री करके ही जाऊँ। यह तभी सम्भव हो सकता है कि मुझे पाप की उलझन से छुटकारा मिल चुका हो, अतः भव-भयभञ्जन। कष्टनिकन्दन! **'दामेव वत्सादि मुमुग्ध्यंहः'** [ऋ० २।२८।६] = बच्चे (बछड़े) से रस्सी की भाँति मुझसे पाप को छुड़ा, क्योंकि-**'नहि त्वदारे निमिषश्चनेशे'** [ऋ० २।२८।६] = तुझसे दूर रहकर तो मैं आँख भी नहीं झपका सकता, अतः पिता! पाप छुड़ा और अपने पास बसा।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

त्वं नः पश्चादधरादुत्तरात्पुर इन्द्र नि पाहि विश्वतः।
आरे अस्मत्कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः।।

-ऋ० ८.३१.१६

भावार्थ-हे कृपासिन्धो परमात्मन्! पीछे से, नीचे से, ऊपर से, आगे से और सब दिशाओं से हमारी सब प्रकार सदा रक्षा करें। अग्नि, बिजली आदि होने वाले आधिदैविक भय से और चिन्ता ज्वरादि से होने वाले आध्यात्मिक भय सिंह, सर्प, चोर, डाकू, राक्षस, पिशाचादिकों से होने वाले, अनेक प्रकार के आधिभौतिक भय, हम से दूर हटावें, जिससे हम निर्भय होकर आप जगत्पिता की भक्ति में और आपकी वैदिक ज्ञान के प्रचार की आज्ञापालन में सदा तत्पर रहें।

योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे।
सखाय इन्द्रमूतये।।

-ऋ० १.३०.७

भावार्थ-हे मित्रो! सब कार्यों के और सब युद्धों के आरम्भ में, अति बलवान् इन्द्र की, अपनी रक्षा के लिए हम सब लोग प्रेम से प्रार्थना करते हैं, जिससे हमारे सब कार्य निर्विघ्नतया पूर्ण हों। हमारे मन में ही जो सदा देवासुर संग्राम बना रहता है, सात्विक दैवी गुण, अपनी विजय चाहते हैं और तामसी राक्षसी गुण, अपनी विजय चाहते हैं। उनमें तामसी गुणों की पराजय हो कर, हमारे दैवी गुणों की विजय हो, जिससे हम इस आभ्यन्तर युद्ध में विजयी होकर इस लोक और परलोक में सदा सुखी रहें।

ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा।
इन्द्र चोष्कूयसे वसु।।

-ऋ० ८.६.४१

भावार्थ-हे सब ऐश्वर्य के स्वामी इन्द्र! इस संसार में आपसे पूर्व विद्यमान आप ऋषि हैं। सबका द्रष्टा होने से आपको वेद ने ऋषि कहा है। संसार-भर का सारा धन आपके अधीन है। जिस पर आप प्रसन्न होते हैं, उसको अनेक प्रकार का धन आप ही देते हैं और आप अकेले ही अपने अनन्त बल से सब पर शासन कर रहे हैं।

दिव्य मातृत्व से ही दिव्य संतान निर्माण संभव

ले.-डा. अर्चना प्रिय आर्य एम. ए., पीएचडी (संस्कृत)

पुत्र का निर्माण करने के कारण ही नारी की संज्ञा माता है। जननी तो हर स्त्री होती है परन्तु माँ के विषय में कहा जाता है 'जो करे पुत्र निर्माण माता सोई' और इसीलिए महर्षि मनु ने माँ को दस सहस्त्र आचार्यों के समान कहा है-

उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।

सहस्त्रं तु पितृन माता गौरवेणातिरिच्यते।।

माँ सन्तान के नाम पर कूड़ा, कचरा पैदा कर धरती माँ का बोझ नहीं बढ़ाती थी, बल्कि ऐसी चरित्रवान, जितेन्द्रिय, वीर बहादुर व शक्तिशाली सन्तान का निर्माण करती थी जो भारत माँ के दर्द को दूर करने वाली होती थी। क्योंकि वेदों ने कहा है-'वीरभोग्या वसुन्धरा' अर्थात् ये भूमि वीरों के लिए है, कायर व कमजोर लोगों के लिए नहीं है। यही कारण था कि पहले यदि नारी अपने को निर्दोष प्रस्तुत करती थी तो इस बात की शपथ लेती थी। कहते हैं कि सप्तमहर्षि माता अरून्धती सहित यात्रा कर रहे थे। मार्ग में किसी वस्तु की चोरी हो गई। प्रत्येक अपनी सफाई देने लगा। माता अरून्धती कहती हैं 'जो पाप अयोग्य और दुर्बल सन्तान उत्पन्न करने का होता है वह पाप मुझे लगे, यदि मैंने चोरी की हो।' यहाँ स्पष्ट है कि प्राचीन मातायें आयोग्य और दुर्बल सन्तान पैदा करना महापाप समझती थीं।

योगीराज श्रीकृष्ण की वीरता, शौर्य, राजनीतिकता, प्रभुभक्ति, गोमाता प्रेम, सेवा भाव और धर्मशीलता से आप परिचित हैं, परन्तु इसका मूल भी आपको माता देवकी के अनुपम धैर्य, कष्ट, सहिष्णुता, रूप, तप, वीरता, ईश्वर प्रेम और माता यशोदा की लोरियों में देखना होगा। छत्रपति शिवाजी को सिंहगढ़ विजय की प्रेरणा करने वाली माता जीजाबाई थी।''सिंहगढ़ विजय करो बेटा भगवा ध्वज चलकर फैराओ।'' भक्त ध्रुव का निर्माण करने वाली माता सुनीति थी। हनुमान का निर्माण अंजना ने किया। भीष्म पितामह की व्रतनिष्ठा का मूल उनकी माता गंगा की व्रतसाधना में छिपा है। आल्हा ऊदल की वीरता का रहस्य माता देवलीदेवी की शिक्षायें हैं। गोरा-बादल की प्राण संचारी शक्ति माता जवाहरबाई और हताश पुत्र संजय को धिक्कारते हुए पुनः कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ करने वाली वीर माता मदालसा के उदाहरण में सर्वाधिक स्पष्ट हुआ है। वे अपने तीनों पुत्रों विक्रान्त, सुबाहु एवं शत्रुमर्दन को शुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि, निरंजनोऽसि, संसार माया परिवर्जितोऽसि का उपदेश करके विरक्त बना देती है। चौथे पुत्र अलर्क को भी जब यही उपदेश करने लगी तो राजा चिन्तित हो उठते हैं और कहते हैं 'देवि! इसे भी विरक्त बनाकर मेरी वंश परम्परा उच्छेद करने पर क्यों तुली हो? इसे प्रवृति मार्ग में लगाओ और उसके अनुकूल ही उपदेश दो।'

मदालसा ने पति की आज्ञा मान ली और अलर्क को बचपन में ही व्यवहार-शास्त्र का पण्डित बना दिया। उसे राजनीति का पूर्ण ज्ञान कराया। धर्म, अर्थ और काम तीनों शास्त्रों में वह प्रवीण बन गया। बड़े होने पर माता-पिता ने अलर्क को राजगद्दी पर बिठाया और स्वयं वन में तपस्या करने के लिए चले गये। किसी कवि की पंक्तियाँ प्रसंगवश पठनीय हैं-

माता के सिखाये पुत्र कायर और क्रूर होत।

माता के सिखाये पुत्र दाता और शूर हैं।।

माता के सिखाये पुत्र ब्रह्मचारी बलवान होत।

माता के सिखाये पुत्र जग में मशहूर हैं।।

हमारी मातायें, बहिने, आज भी महर्षि दयानन्द, सुभाष चन्द्र बोस, सरदार बल्लभभाई पटेल, सरदार भगत सिंह, लाल बहादुर शास्त्री सरीखे लालों का निर्माण करके वे अपने महान राष्ट्र को फिर जगहगुरु बनाने में योगदान दे सकती हैं। इसके लिए उन्हें 'सन्तति निर्माण शास्त्र' का अध्ययन करना होगा। गर्भाधान से लेकर उपनयन संस्कार तक इसी विज्ञान का शिक्षण है। मनुस्मृति आदि धर्म शास्त्रों में भी इसके लिए आवश्यक विधान हैं। गर्भाधान प्रक्रिया के पीछे एक स्वस्थ कल्पना और उत्कृष्ट भावना, रहन-सहन किस प्रकार के चित्रों का अवलोकन किस प्रकार के ग्रन्थों का अध्ययन, बालक को किसी-किसी प्रकार की लोरियाँ, रहन-सहन आदि किस प्रकार की कहानियाँ, कवितायें, गीत कण्ठस्थ कराना, कैसी स्त्रियों का साथ आदि किस प्रकार का शिष्टाचार हो सन्तति निर्माण विज्ञान के अनेक विभाग हैं।

खेत में उत्तम फसल प्राप्त करने के लिए बीज डालने के पूर्व खेत को तैयार करना होता है। माँ ही वह खेत है।''माता निर्माता भवति'' माँ ही निर्मात्री शक्ति है। मातायें ही किसी राष्ट्र और जन-जीवन की आधार शिला है परन्तु अपनी मनोभूमि को ऐसा बनाने के लिए, मानव जीवन के महत्व, ईश्वर भक्ति और मातृभूमि भक्ति के रहस्य को जानने के साथ ही इस युग के महिमामय क्रान्तिदर्शी ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित सोलह संस्कारों की वैदिक विधि महत्व और प्रक्रिया को समझना आवश्यक होगा। रामप्रसाद बिस्मिल की माँ ने बचपन से ही अपने बच्चे को स्वामी दयानन्द का यह सन्देश सुनाकर ''गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य, अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है।'' फाँसी की रस्सी को चूमने की प्रेरणा दी थी।

आज के युग की सबसे बड़ी समस्या है। मानवता से युक्त सच्चे मानव का अकाल। आज यही समझना है कि आदर्श मानवों के इस अकाल को पुरूष नहीं स्त्रियाँ ही दूर कर सकती हैं क्योंकि स्त्री का वास्तविक स्वरूप माता का है और 'माता निर्माता भवति' माता ही राष्ट्र और जीवन की निर्मात्री शक्ति है। 'मातृवान-पितृवान, आचार्यवान पुरूषो वेद:' शतपथ ब्राह्मण का यह वचन है। जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान बनता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि वह सन्तान बड़ी भाग्यवान है जिसके माता-पिता धार्मिक, विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। जितना माता सन्तानों पर प्रेम और उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए ''प्रशस्ता धार्मिकी माता यस्य स मातृवान'' धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक शिक्षा पूरी न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर की जेल में ब्रिटिश राज्य को उखाड़ने के प्रयत्न में फाँसी की सजा दी जा चुकी थी। भारत के गवर्नर जनरल ने क्षमा माँग लेने और भविष्य में वैसा न करने का आश्वासन देने पर फाँसी से छुटकारा देने का आश्वासन दे दिया।

रामप्रसाद बिस्मिल की फाँसी से एक दिन पूर्व उनके पिता उससे मिलने आये और उन्होंने पुत्र-प्रेम से विह्वल हो उसे क्षमा माँगने और भविष्य में स्वतन्त्रता के संग्राम में न कूदने की मार्मिक अपील की। पाठको! लेकिन एक आर्यवीर को मृत्यु भयभीत नहीं कर सकती थी। स्वामी दयानन्द के अनुयायी इस बिस्मिल के लिए मृत्यु कोई भयवाली वस्तु नहीं थी। मृत्यु का अर्थ उसकी दृष्टि में तो माँ की गोद में सो जाना। छोटा बच्चा दिन भर खिलखिलाता है, हँसता है, रोता है, गिरता है और रात्रि होते ही माँ उसे उठा लेती हैं यही हाल जीव का है। संसार से जीव को मृत्यु माता उठा लेती है। मृत्यु मानो महामाया है, महाप्रस्थान है, मृत्यु महा निद्रा है, मृत्यु मानो शान्ति है, मृत्यु मानो नवजीवन का आरम्भ है, मृत्यु मानो आनन्द का दर्शन है, मृत्यु मानो पर्व है, मृत्यु मानो प्रियतम के पास जाना है। तब भला यह मृत्यु रामप्रसाद बिस्लिम को कैसे भयभीत कर सकती थी। उसने पिता की प्रार्थना अस्वीकार कर दी। कुछ समय पश्चात् उसकी माँ पहुँची। माँ के पहुँचते ही बिस्मिल ने रोना शुरू कर दिया माँ के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। माँ ने बेटे को फटकारते हुये कहा कि जब मरने से इतना ही डर लगता था तो इस मार्ग को क्यों चुना? माँ के इन वचनों को सुनकर वो बिस्मिल अपनी आँखों से आँसू पोंछते हुये बोला, ''माँ! मैं मृत्यु से डरकर नहीं रो रहा हूँ। मौत का मुझे कोई गम नहीं है परन्तु मैं तो इसलिए रो रहा हूँ कि मरने के बाद मुझे तुझ जैसी बहादुर माँ की गोद कहाँ मिलेगी? वास्तव में माताओं ने अपने हृदय के तीव्र वेगों से जो चमत्कार किए हैं, उनके अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। माता कौशल्या, माता अंजना, माता मदालसा, माता देवकी, माता यशोदा, जीजाबाई आदि के शत सहस्त्र

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

तप और त्याग के प्रतीक -महात्मा हंसराज

धन्य वह भूमि है जहां महात्मा हंसराज ने जन्म लिया। महात्मा जी ने अपने नाम के साथ-साथ अपने परिवार और छोटे से गांव का नाम भी प्रसिद्ध कर दिया। नीतिकार द्वारा कहे गए वाक्य-वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि की कहावत को चरितार्थ करते हुए अपने कुल का नाम संसार भर में रोशन कर दिया। महात्मा हंसराज ने अपने जीवन में वो कार्य किए जो हमेशा अमर रहेंगे। गृहस्थ होकर तथा सांसारिक जीवन व्यतीत करते हुए भी कोई व्यक्ति किस प्रकार देश, समाज तथा व्यापक जनहित के लिए स्वयं को समर्पित कर सकता है, यदि यह शिक्षा लेना चाहते हो तो महात्मा हंसराज के जीवन चरित्र को पढ़ना चाहिए। महात्मा हंसराज जी अपने जीवन में ऐसे कार्य कर गए हैं जिनके द्वारा वे आने वाली कई पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करते रहेंगे।

महात्मा हंसराज जी का जन्म १९ अप्रैल १८६४ को होशियारपुर जिले के बजवाड़ा नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री चूनी लाल और माता का नाम श्रीमती हरदेवी था। महात्मा हंसराज ने जिस परिवार में जन्म लिया वह यद्यपि था तो निर्धन परन्तु मेहनती और स्वाभिमानी परिवार था। हंसराज जी के एक बड़े भाई भी थे जिनका नाम श्री मुलखराज जी था। माता-पिता दोनों ने निश्चय किया कि दोनों को अच्छी शिक्षा दी जाए। माता-पिता ने सोचा होगा कि बालक पढ़ लिख कर घर की आर्थिक अवस्था सुधारेगा, परन्तु उन्हें क्या पता था कि उनका बालक एक बहुत बड़ा धर्म रक्षक, देश सेवक और महात्मा बनने वाला है। जो केवल अपने परिवार, कुल का ही नहीं अपितु राष्ट्र का नाम रोशन करने वाला बनेगा।

बचपन से ही हंसराज में महान् पुरूषों के गुण दिखाई देने लगे थे और बचपन से ही हंसराज का यह प्रभाव था कि उनका कोई साथी उनकी बात टाल नहीं पाता था। दूसरों का उपकार करने की भावना भी उनमें बचपन से ही थी। जब वे पढ़ते थे तभी से वे दूसरे पड़ोसियों के पत्र आदि पढ और लिख दिया करते थे। 12 वर्ष की आयु में उनके पिता का देहान्त हो गया था। आर्थिक कठिनाईयों का सामना करते हुए भी हंसराज ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और अन्ततः उन्होंने बी.ए. पास कर ली जो उस समय बहुत ऊंची डिग्री मानी जाती थी। यदि वह चाहते तो सरलता से सरकारी नौकरी करके धन-धान्य से परिपूर्ण हो सकते थे परन्तु उन्होंने अपना सर्वस्व आर्य समाज की सेवा में अर्पित कर दिया और परोपकार की भावना हंसराज जी को घर की सीमाओं में कैद नहीं कर सकी। महात्मा हंसराज जी ने ठीक समय पर अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया।

महर्षि दयानन्द की याद में 1886 में जब डी. ए. वी. स्कूल की स्थापना की गई तो एक सुयोग्य मुख्याध्यापक की आवश्यकता अनुभव हुई। महात्मा हंसराज जी ने अपने बड़े भाई श्री मुलखराज जी से सलाह करके अपने आपको अवैतनिक संस्था के लिए समर्पित कर दिया। महात्मा हंसराज चाहते तो अन्य सांसारिक लोगों की तरह उच्च से उच्च पद प्राप्त कर लाखों की सम्पत्ति जुटा लेते। लेकिन जाति की दुरावस्था ने उन्हें बलिदान के मार्ग पर बढ़ने के लिए प्रेरित किया। सारी आयु निर्धनता, तपस्या और त्याग में बिताते हुए संसार के कल्याण के लिए धर्म, देश और जाति की सेवा का प्रण लिया। होश सम्भालने से लेकर अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक उन्होंने देश से अज्ञानता को दूर करने का प्रयत्न किया। हिन्दु समाज को सुधारने और दुःखी, भूकम्प, अकाल, दुर्भिक्ष, महामारी, पीड़ितो की सेवा सहायता करने के लिए तत्पर रहे। उनकी निस्वार्थ सेवाओं और निष्काम प्रयत्नों से उन्हें हर क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिली। उनका सारा जीवन तप, और त्याग का जीवन था। धन-दौलत, सुख-सम्पदा भोग ऐश्वर्य सबका त्याग किया। भाई द्वारा प्राप्त केवल चालीस रूपये मासिक पर गुजारा करते रहे। स्व-प्राप्त गरीबी में दुख के दिन काटना सबसे कठोर समस्या है। यक्ष के पूछने पर कि तप क्या है? युधिष्ठिर ने कहा था कि अपने कर्त्तव्य करते रहना ही तप है। दुख-सुख, रोग-अरोग, मान-अपमान की परवाह किए बिना अपने कर्त्तव्य का पालन करते जाना सच्चा तप है। महात्मा हंसराज जी ने अपने भाषण में कहा था कि मनुष्य जीवन का एक ध्येय होना चाहिए, एक केन्द्र जहां पहुंच कर वह अपना जीवन कुर्बान कर सके। एक स्थान होना चाहिए जहां पहुंच कर गर्व से कह सके कि चाहे प्राण चले जाए, चाहे सब ओर नाश विनाश नाचने लगे तो भी वह लौटेगा नहीं, पीछे नहीं हटेगा। ऐसे स्थान पर ही मनुष्य का वास्तविक चरित्र और उसका मोल मालूम होता है। यह शब्द महात्मा जी के ही मुख को शोभा देते है, जिन्होंने जीवन का एक ध्येय मानकर उम्र भर तपना मंजूर किया।

त्याग की साक्षात् मूर्ति, सरलता एवं सादगी का सजीव चित्र, निरभिमानता के आदर्श महात्मा हंसराज का जीवन अनुकरणीय है। रहने का एक छोटा सा कमरा, लकड़ी का एक तख्तपोश, दो टूटी हुई कुर्सियां और कपड़े मोटे-मोटे शुद्ध स्वदेशी यह उनका वेश था। महात्मा जी के जीवन का एक ही उद्देश्य था कि ऋषि का मिशन सफल हो ताकि हिन्दु जाति में नया जीवन आए। वह कुरीतियों और वहमों से बचे, एक ईश्वर की उपासक हो और पराधीनता की बेड़ियों को काट सके। महात्मा हंसराज जी ने महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रति अर्पण कर दिया।

वस्तुतः महात्मा हंसराज जी श्वेत वस्त्रों में ही सन्यासी थे। जब 1933 में अजमेर में आयोजित ऋषि दयानन्द के निर्वाण की अर्ध शताब्दी पर कुछ सन्यासियों ने स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज से निवेदन किया कि वे उनके साथ चलकर महात्मा हंसराज जी को चतुर्थाश्रम की दीक्षा लेने के लिए प्रेरित करें। तब वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि निर्द्वन्द तथा सभी प्रकार की ऐषणाओं से मुक्त महात्मा जी किसी भी कमण्डलधारी सन्यासी से कम नहीं हैं और मात्र कपड़े रंगकर सन्यास का बाना पहनने की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं है।

महात्मा हंसराज जी का सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिए समर्पित था। शिक्षा क्षेत्र के साथ-साथ उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में अपना योगदान दिया। चाहे भूकम्प हो, अकाल हो, महात्मा जी हमेशा मानवता के कल्याण के लिए समर्पित रहे। महात्मा हंसराज का जीवन सब प्रकार की ऐषणाओं से मुक्त था। 19 अप्रैल को महात्मा हंसराज जी के जन्मदिवस पर हम उनके मानवता के पथ-प्रदर्शक कार्यों को अपने जीवन में अपनाएं। शिक्षा तथा सामाजिक क्षेत्र में किए गए कार्यों के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। महात्मा हंसराज के जीवन से प्रेरणा लेकर शिक्षा के क्षेत्र में तथा समाज सेवा के क्षेत्र में कार्य करें।

प्रेम भारद्वाज

संपादक एवं सभा महामन्त्री

मिट्टी अपरदन

लेo-शिवनारायण उपाध्याय कोटा (राज.)

वायु, जल एवं भोजन सामग्री के समान ही प्राणी मात्र के लिए वह मिट्टी भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भूमि हमारे लिए आश्रय स्थल है। इसकी मिट्टी से प्राणी मात्र का सम्बन्ध जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त बना रहता है। मृत्यु के उपरान्त तो प्राणी का शरीर इस मिट्टी का ही एक भाग बन जाता है। बड़े-बड़े राजप्रासादों से लेकर एक सामान्य सी झोपड़ी भी इसी मिट्टी की माया है। विभिन्न पेड़-पौधे, शाक, झाड़ियां आदि सब इस मिट्टी में ही पैदा होते हैं। इस मिट्टी में डाला गया गेहूं का एक दाना ही तीन-चार माह के अन्दर ही सैकड़ों दानों में बदल जाता है। हमारे सभी खाद्य पदार्थों एवं अधिकांश पेय पदार्थों की जन्म दात्री यह मिट्टी ही है। हमारे लिए उपयोगी नाना ओषधियां, फल, फूल, मूल, गोंद, राल, रबर आदि अनेक पदार्थ अपनी जन्मदात्री इस मिट्टी से जन्म पाकर इस लोक में प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। हम अपने वस्त्र, कागज आदि के लिए भी इस मिट्टी पर ही निर्भर हैं।

मिट्टी की परिभाषा-

भूपटल की ऊपरी मृदा सतह को मिट्ठी कहते हैं। भूमि की ऊपरी पतली परत जो कि असंगठित पदार्थों की बनी हुई होती है को मिट्टी कहते हैं। इसका निर्माण चट्टानों तथा जैव पदार्थों के अपक्षय तथा विघटन से होता है। भू-गर्भिक दृष्टि से मिट्टी की परिभाषा है- 'मिट्टी अपक्षय की क्रियाओं द्वारा चट्टानों से उत्पन्न होती है। इसमें चट्टानों के टुकड़े, खनिज तथा पौधो व जीवों के सड़ने-गलने से जैविक तत्व मिले होते है।'

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार- 'मिट्टी चौका (Clay) बालू (Sand) ह्यूमस आदि का मिश्रण है जो कि पौधों की उत्पत्ति का माध्यम होता है।'

डॉ. एच. एच. वैनेट के अनुसार-मिट्टी भू-पृष्ठ पर मिलने वाली असंगठित पदार्थों की वह ऊपरी परत है जो मूल चट्टानों तथा वनस्पति के अंश के योग से बनती है।

मिट्टी अपरदन-मिट्टी अपरदन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मिट्टी के कण व किसी एक अथवा एक से अधिक भोगोलिक कारकों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाए जाते हैं। मिट्टी अपरदन की क्रिया लगभग सभी क्षेत्रों में देखने को मिलती है। परन्तु अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग भौगोलिक कारक सक्रिय होते हैं। समुद्री क्षेत्रों में समुद्री लहरों तथा तरंगो द्वारा, मरूस्थलीय क्षेत्रों में वायु द्वारा, पठारी क्षेत्रों में अपक्षय तथा बहते हुए पानी द्वारा, पर्वतीय क्षेत्रों में नदियों, हिम नदियों, सड़क निर्माण, वन विनाश, पशु चरण, ढलवां कृषि तथा अन्य मानवीय क्रिया-कलाप तथा पर्यावरणीय कारक मिट्टी अपरदन के लिए सामूहिक रूप से उत्तरदायी हैं।

भारत में मिट्टी अपरदन के लिए उत्तरदायी कारक निम्नांकित हैं।

(1) भू-स्खलन द्वारा-भू-स्खलन द्वारा मिट्टी अपरदन पर्वतीय क्षेत्रों में मुख्य रूप से हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में हो रहा है।

उत्तर काशी जनपद में गंगोत्री सड़क मार्ग पर शहर के आस-पास तथा भटवाड़ी तक 40 किमी. तक क्षेत्र में भू-स्खलन की गम्भीर समस्या है। भू-स्खलन द्वारा केवल गावों का विनाश हो रहा है अपितु वन क्षेत्र भी बड़े पैमाने पर समाप्त हो रहे हैं।

(2) वर्षा द्वारा मिट्टी अपरदन-हमारे देश में मानसूनी वर्षा बौछारों के रूप में होती है। तेजी से गिरने वाली बूंदें जब वृक्ष विहीन स्थानों पर गिरती है तो उस स्थान की मिट्टी उखड़ कर नष्ट हो जाती है। वर्षा ऋतु में बहते हुए जल के द्वारा हिमालय क्षेत्र से करोड़ों टन उपजाऊ मिट्टी गंगा, यमुना, सिन्ध, सतलुज के मैदान में जमा हो जाती है। वर्षा की बूंदों के आयतन एवं भार द्वारा मिट्टी का घोल निर्मित होता है। मिट्टी के इस घोल को कंकड़-पत्थर तथा बहता हुआ जल आगे ले जाता है। मिट्टी अपरदन की इस क्रिया में मूसलाधार ओलों की वर्षा से भी बढ़ावा मिल रहा है। वर्षा द्वारा मिट्टी अपरदन मुख्यतया वनों के क्षेत्र पर भी निर्भर करता है। छितरे हुए वन भागों की अपेक्षा वन विहीन क्षेत्रों में मिट्टी अपरदन अधिक होता है। पश्चिमी हिमायल की ऊपर सतह के एक क्षेत्र में छोटे-छोटे नदी, नालों के कारण ढालू क्षेत्रों में मिट्टी का कराव हो रहा है।

(3) हिमानियों द्वारा अपरदन-वैज्ञानिकों के अनुसार वनों के घटने और तापमान के बढ़ने से हिमालय क्षेत्र में हिम का पिघलना हो रहा है। इस पिघलते हुए हिमनद के साथ हिमाच्छादित क्षेत्रों में बड़े-बड़े पत्थर, कंकड़ तथा मिट्टी बहकर आ रही है इससे कृषि का नाश हो रहा है।

(4) सड़क निर्माण से मिट्टी अपरदन-हमारे देश में ज्यों-ज्यों सड़कों का निर्माण द्रुतगति से हो रहा है त्यों-त्यों सड़कों के समीपवर्ती क्षेत्रों से मिट्टी अपरदन की समस्या बढ़ रही है। सड़क निर्माण द्वारा सबसे अधिक मिट्टी अपरदन पर्वतीय क्षेत्रों में हो रहा है। पर्वतीय क्षेत्रों की सड़क पहाड़ों को चीरती हुई निकालती है। जिससे सड़कों के ऊपरी भागों की मिट्टी भी टूट कर नीचे गिरती है। सड़क की खुदाई से निकली मिट्टी सड़क के नीचे गिरती, लुढ़कती हुई तथा पृथ्वी को खुरचती हुई जब वर्षा के पानी के साथ बहती है तब कृषि भूमि को तबाह कर देती है। साथ ही नदी-नालों को भी भर देती है।

(5) वन विनाश द्वारा मिट्टी अपरदन-मनुष्यों ने वनों का विनाश बड़े पैमाने पर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जिससे भूमि वनस्पति विहीन हो गई। वनस्पति विहीन भूमि में पशुचारण के समय पशुओं के खुरों से मिट्टी खुरचकर वर्षा के जल के साथ बह जाती है और भूमि तथा चट्टानें नंगी हो जाती हैं। वनविहीन भूमि वर्षा और पानी का प्रभाव सहन नहीं कर सकती है। राजस्थान का विशाल-भूमि-भाग जो पहले सघन वनों से ढका था, वन विनाश तथा अधिक पशुचारण के कारण ही मरूस्थल में परिवर्तित हुआ है। हिमालय क्षेत्र में वन विनाश का मिट्टी अपरदन पर अधिक विनाशकारी प्रभाव पड़ा है। वृक्षों की जड़ें जिस मिट्टी को बांधे या जकड़े रखती है वन विनाश के फल स्वरूप वर्षा के जल के साथ कट गयी है। वन विनाश द्वारा मिट्टी अपरदन होने से न केवल नदियों के जलाशय गाद से भर रहे हैं। अपितु नदियों की सतह भी मलबे से ऊंची उठ रही है। इससे वे उथली हो गई है और वर्षा के पानी को रोक नहीं पाती है। कई नदियां सूख गई हैं। इससे गांवों में पीने के पानी की भी कमी हो गई है।

(6) कृषि विकास द्वारा मिट्टी अपरदन-मनुष्य के लिए कृषि अत्यन्त आवश्यक है। विश्व की आधी जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है। जैसे-जैसे विश्व की जनसंख्या बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे कृषि भूमि के विस्तार के लिए वनों को काटा जा रहा है जिससे मिट्टी अपरदन में और अधिक वृद्धि हुई है। अविकसित तथा विकासशील देशों में यह समस्या अधिक गम्भीर है।

(7) अनियंत्ररित चराई द्वारा मिट्टी अपरदन-हमारे देश में चरागाहों का अधिक विस्तार नहीं है किन्तु विश्व की सबसे अधिक पशु संख्या भारत में ही है। हमारे देश में पशुओं को चारा उपलब्ध कराने के लिए घास के मैदानों का संरक्षण भी आवश्यक है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ हमारे देश में पशुओं की संख्या में भी वृद्धि हो रही है जिससे प्रति पशु तथा घास के मैदान का अनुपात घट रहा है। घास के मैदानों में निरन्तर पशुचारण से चराई क्षेत्र घास रहित मिट्टी रहित तथा वीरान होता जा रहा है।

मिट्टी अपरदन की रोकथाम के उपाय-मिट्टी सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जिस पर कि देश की अर्थव्यवस्था व परिस्थिति का सन्तुलन निर्भर कर रहा है, का संरक्षण आवश्यक है। 'मिट्टी संरक्षण का अर्थ मिट्टी की सामर्थ्य के अनुसार उपयोगिता से है। योजना समिति के अनुसार मिट्टी संरक्षण के अन्तर्गत मिट्टी प्रबन्ध की वे समस्त विधियां तथा उपागम आते हैं जिनके द्वारा मिट्टी की उपजाऊ शक्ति को पूर्णरूप से नष्ट होने से बचाया जा सके।'

मिट्टी संरक्षण एवं मिट्टी अपरदन की रोकथाम के लिए निम्न सुझाव है-

(1) बड़े पैमाने पर वन विनाश,

(शेष पृष्ठ 6 पर)

संसार में शान्ति प्राप्त करने का एक मात्र उपाय-वैदिक धर्म

पं०-उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित संस्कार विधि जो युग निर्माण में महत्वपूर्ण है, उसके गृहाश्रम प्रकरण में वैदिक धर्म के विषय में लिखते है कि:

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद। धर्म त्ययेज्जीवितस्यपि हेतोः।

धर्मो नित्यः सुख दुःखेत्व नित्ये, जीवो नित्यो हेतु स्वं स्वनित्य।। महाभारते-।।

अर्थात्: मनुष्यों को योग्य है कि काम से, अर्थात् झूठ से कामना सिद्ध होने के कारण से वा निन्दा स्तुति आदि के भय से भी धर्म का त्याग कभी न करे और न लोभ से। चाहे झूठ अधर्म से चक्रवर्ती राज्य भी मिलता हो तथापि धर्म को छोड़कर चक्रवर्ती राज्य को भी ग्रहण न करें क्योंकि जीव व धर्म तो नित्य है तथा सुख दुःख दोनों अनित्य हैं अनित्य के लिये नित्य छोड़ना अतीव दुष्ट कर्म हैं इस धर्म के हेतु कि जिस शरीर आदि से धर्म होता है। वह भी अनित्य हैं धन्य वे मनुष्य है जो अनित्य शरीर और सुख दुःखादि के व्यवहार से वर्तमान होकर नित्य धर्म का त्याग कभी नहीं करते।

संस्कार विधि-।।

धर्म एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः

तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतो ऽवधीतः।। महाभारते।।

अर्थात् जो पुरूष धर्म का नाश करता है, उसका नाश धर्म कर देता है, और जो धर्म की रक्षा करता है, उसकी धर्म भी रक्षा करता हैं इसलिए मारा हुआ धर्म कभी हमें भी न मार डाले, इस भय से धर्म का हनन अर्थात् त्याग कभी न करना चाहिए।

यत्र धर्मो हव्यधर्मेण सत्य यत्रानृतेन च-।

ऽयन्ते प्रेक्षमाणानं हतास्तत्र सभासदा-।। मनु-।

अर्थात् जिस सभा में बैठे हुए सभासदों के सामने अधर्म से धर्म और झूठ से सत्य का हनन होता हैं उस सभा के सब सभासद मरे से ही है।

महर्षि दयानन्द जी संस्कार विधि में गृह्यश्रम प्रकरण में लिखते है।

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, वृद्धा न ते येन वदन्ति धर्मम।
नासौ धर्मो यत्र नः सत्यमस्ति, न तत सत्य यच्छलेनाभ्यु पेतम-।। महाभारते

अर्थात् वह सभा व परिवार नहीं है, जिसमें वृद्ध पुरूष न होवे। वे वृद्ध नहीं है जो धर्म की बात नहीं बोलते। वह धर्म नहीं है, जिसमें सत्य नहीं है और न व सत्य है जो छल से युक्त हो।

स्वाध्यायेन जपैर्होमैस्त्रै-विधे-नेज्यया सुतैः।

महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राहीयं क्रियते तनुः।। (मनु)

अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि धर्म से वेदादि शास्त्रों का पठन-पाठन गायत्री-प्रणवादि का अर्थ विचार, ध्यान, अग्नि होत्रादि होम, कर्मोपासना ज्ञान-विद्या, पौर्णमा-स्यादि, इष्टि, पञ्चमहायज्ञ, अग्निष्टोम आदि न्याय से राज्य-पालन, सत्योपदेश और योगा-भ्यासदि उत्तम कर्मो से इस शरीर को अर्थात् ब्रह्मसम्बन्धी करें।

सत्यार्थ प्रकाश से : मनुष्य उसी को कहना कि मनन शील होकर स्वात्मवत अन्यो के सुखः दुखः और हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे व महासनाथ निर्बल और गुण रहित क्यों न हो रक्षा उन्नति और प्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे प्राण ही भले चले जाये, परन्तु मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक कभी न हो।

मानव के नव निर्माण का आधार वैदिक सोलह संस्कार है।

संस्कार का अर्थ है किसी वस्तु के रूप को बदल देना वैदिक संस्कृति में मानव जीवन निर्माण के लिये सोलह संस्कारों का विधान है। इसका अर्थ है कि जन्म से सोलह बार मानव को बदलने की प्रक्रिया है। जैसे लोहार लोहे को अग्नि में डालकर अपने अनुसार वस्तु का संस्कार देता है। उसी प्रकार बालक के उत्पन्न होने से पहले और बाद में संस्कारों की भट्टी में डाल कर दुर्गुण निकाल कर सदगुण बनने की प्रक्रिया है।

चरकऋषि ने कहा है :

संस्कारो हि गुणान्तरा-धानमुच्यते

अर्थात् संस्कार से पूर्व जन्म के दुर्गुणों को हटाकर सदगुणों का आधान कर देने का विधान हैं। बालक का जन्म होता है तो वह दो संस्कारों को लेकर चलता है, एक जन्म जन्मान्तरों के संस्कार दूसरा माता पिता के संस्कारों का वंश परम्परा से करता है। वैदिक संस्कार व संस्कृति की योजना से ही मानव का नव आदर्श संस्कारिक निर्माण होता है।

यह आवश्यक है-उपेक्षणीय नहीं

समाज सुधारकों को आज मानव जगत में हो रहे कुसंस्कारों और अत्यधिक पाश्चात्य सभ्यता के वातावरण को देखकर चिन्तित है, आज परिवार टूट रहे हैं, स्वार्थ और अत्यधिक सुख पाने की लालसा में माता-पिता व अन्य बुजुर्गों की अवहेलना हो रही है। कितना सुन्दर और संस्कारिक भारतीयों का अतीत था, सभी भारतवासी सुख उठाते रहे और भारत धरती का स्वर्ग धाम बना रहा। परन्तु आज से छ हजार वर्ष व्यतीत हुए कि भारतीयों के परिवार वैदिक शिक्षा को छोड़कर अवैदिक शिक्षा पर चलकर निरन्तर धार्मिक सामाजिक राजनैतिक के उच्च आदर्शों को छोड़ते जा रहे हैं।

युग निर्माण के लिये आवश्यक प्रयत्न करना इसलिये उचित है कि जिस दुनिया में हम रहते है, यदि वह कुसंस्कारी व दूषित रहेंगे तो अपने लिये सदा संकट और चिन्ता की स्थिति बनी रहेगी। यदि चारों ओर विवेकहीन व दुष्टतापूर्ण वातावरण बना हुआ हो तो अपने सत्य आदर्श व यत्न निरर्थक चले जाते हैं। वातावरण में फैली बुराइयों और विचार धारा हवा और सर्दी गर्मी की तरह अपने ऊपर आक्रमण करती है। इसलिये आवश्यक है कि बुराइयों से सदैव संघर्ष करना चाहिए। समाज में कुरीतियां फैली हो और हम चुप बैठे रहे तो यह अविवेक पूर्ण होगा। चोर, डाकू-दुष्ट, दुराचारी, शरारती और अन्धविश्वासी लोगों के बीच रहकर कोई भी व्यक्ति अपनी सज्जनता व आदर्शो की रक्षा नहीं कर सकता है। किन्तु श्रेष्ठ मनुष्यों का उत्तर-दायित्व है कि वेदानुकूल संस्कार व संस्कृति के प्रचार प्रसार और उसको अक्षुण्ण रखने के लिये सदैव तत्पर रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते है कि हे मनुष्यों तुम ईश्वर द्वारा प्रदत, अग्नि, वायु-जल-वनस्पति व अन्य दिव्य साधनों द्वारा एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकते हो तो ईश्वर द्वारा प्रदत्त वैदिक धर्म पर क्यों नहीं चलते हो यही तुम्हारी अशान्ति व दुखों का कारण है।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज रमेश नगर करनाल हरियाणा के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। वैदिक रीति से सभी संस्कार सम्पन्न करने की योग्यता आवश्यक है। आवास का प्रबन्ध आर्य समाज की ओर से निःशुल्क रहेगा।

वधू चाहिए

खत्री लड़का, (मंगलीक) कनाडा का पक्का निवासी उम्र 25 वर्ष 6 महीने, कद 5-9, बी. टेक के लिए पढ़ी-लिखी, सुन्दर लड़की चाहिए।

नोट-: लड़का इस समय भारत में आया हुआ है। शीघ्र सम्पर्क करे।

मोबाईल-: 8872300508, 9501062606, व्हाट्सएप पर फोटो सहित अन्य जानकारी भेंजे।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

पृष्ठ 4 का शेष-मिट्टी अपरदन

अत्यधिक वृक्ष कटाई तथा अत्यधिक पशु चराई को रोका जाये।

(2) पर्वतीय क्षेत्रों में नदी घाटी के दोनों और ढालू क्षेत्रों में मिट्टी को बांधने व रोकने के लिए फलोद्यान का विकास किया जाए।

(3) पर्वतीय एवं पठारी क्षेत्रों में सड़क निर्माण के लिए अधिक शक्तिशाली विस्फोटक का प्रयोग नहीं किया जाए।

(4) भूमिगत तथा सतही जल शरीर का उपयोग छोटी-छोटी गुलों तथा नहरों के रूप में किया जाए।

(5) सड़क मार्ग के आस-पास मिट्टी अपरदन रोकने के लिए दोनों ओर शक्तिशाली जल अवरोधक निर्मित किये जाएं।

(6) नदी घाटी के दोनों ओर ढालू क्षेत्रों में परम्परा रूप से होने वाली अवैज्ञानिक कृषि में भी सुधार किया जाए।

(7) नदियों, नालों के किनारे तथा ढालू मैदानी क्षेत्रों में छोटे-छोटे बांध बनाकर जल का बहाव रोका जाए। बांध स्थल पर तथा जलाशय के चारों ओर एवं जलाशय क्षेत्रों में मिट्टी को बांधने वाले पौधे लगाए जाएं।

(8) मैदानी क्षेत्रों में जल का वेग रोकने के लिए खेतों की मेड़बन्दी करना, ऊंची भूमि पर पतली खेती तथा टेढ़ी-मेढ़ी खेती की पद्धति अपनाना आवश्यक है। इससे जल का बहाव रूकेगा तथा खेत की मिट्टी सुरक्षित रहेगी।

(9) मैदानी क्षेत्र की कृषि भूमि में फसलों के चक्र में परिवर्तन लाया जाए क्योंकि निरन्तर व अधिकाधिक फसलों के उत्पादन से मिट्टी की उर्वरा शक्ति समाप्त हो जाती है।

(10) भूमि में पड़ी वनस्पति को स्वत: सड़ने दिया जाये जिससे भूमि की जल ग्रहण क्षमता में वृद्धि होकर मिट्टी का कराव रूक सके।

(11) मरूस्थलीय तथा अर्द्ध मरूस्थलीय के विस्तार को रोकने के लिए रक्षात्मक वृक्षों की पट्टियां विकसित की जाएं।

अब हम अथर्ववेद पृथ्वी सूक्त के आधार पर इस विषय पर चर्चा करते हैं।

यच्चनभ्यं यास्त ऊर्जास्तन्वं संबभूबुः।

यत् ते मध्यं पृथिवी ता सुनो धेह्याभिः।

नः पवस्व माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्याः पर्जन्य पिता स उ न पिपर्तु।। अथर्व. 12.1.12

हे पृथ्वी! जो तेरा मध्य भाग और जो नाभिभाग, जो बलदायक पदार्थ तेरे शरीर से उत्पन्न हुआ हैं उन सबके भीतर हमको शुद्ध कर। पृथ्वी मेरी माता तुल्य है, मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। सींचने वाला मेघ मेरे पिता तुल्य हैं। वह भी हमें पूर्ण करें।

शिलाः भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता धृता।

तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अंकरं नमः।। अथर्व. 12.1.27

अर्थ-(भूमिः) भूमि (शिलाः) चट्टान (अश्मा) पत्थर और (पांसुः) मृदा है। (सा) वह (संधृता) यथावत् धारण की गई (भूमि) पृथ्वी (धृता) धरी हुई है। (तस्यै) उस (हिरण्यवक्षसे) हिरण्यगर्भा (पृथिव्यै) पृथ्वी के लिए (नमः) स्वागत (अकरम्) वचन बोलता हूँ।

इस भूमि की मृदा में ही नाना प्रकार के खाद्यान्न उत्पन्न होते हैं।

भूम्यै पर्जन्य पत्न्यै नमोऽस्तु वर्ष मेदसे।

यस्यामन्नं ब्रीहियवै यस्या इमाः पञ्च कृष्ट यः।। अथर्व. 12.1.42

अर्थ-(यस्या) जिस भूमि पर (अन्नम्) अन्न (ब्रीहियवै) चावल और जौ हैं। (यस्याः) जिसके ऊपर (पञ्च) पांच तत्वों से संबंधित (इमा) ये (कृष्टयः) मनुष्य हैं। (वर्ष मेद से) वर्षा से स्नेह रखने वाली (पर्जन्य पत्न्यै) मेघ द्वारा पालित (भूम्यै) भूमि के लिए (नम अस्तु) हमारे द्वारा अभिवादन किया जाए।

इस मंत्र में दो बातें स्पष्ट रूप से कही गई है। पहली बात तो यह है कि सभी वनस्पतियां इस भूमि की मृदा से ही उत्पन्न होती है। यह पृथ्वी सभी वनस्पतियों की माता है तथा मेघ इनका पिता है क्योंकि वर्षा के रूप में पानी बरसा कर वह पृथ्वी में गर्भाधान करता है।

पृथ्वी के गर्भ में नाना धातुओं की खदाने हैं। हमें उनका खनन बड़ी समझदारी से करना चाहिए। खानों का शोषण भूलकर भी नहीं करना चाहिए।

यत् ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।

मा ते मर्मविमृग्वरी माते हृदयमर्पिपम्।। अथर्व. 12.1.35

अर्थ-(भूमे) हे भूमि! (यत्) जो कुछ (ते) तेरा (विखनामि) मैं खोद डालूं।

(तत्) वह (क्षिप्रम्अपि) शीघ्र ही (रोहतु) उगे। (विमृग्वरि) हे खोजने योग्य। (मा) न तो (ते) तेरे (मर्म) मर्म स्थान को और (मा) न (ते) तेरे (हृदयम्) हृदय को (अर्पिपम्) मैं हानि पहुंचाऊँ।

हम लोग पृथ्वी की गोद में (मृदा में) ही स्वस्थ रहते हैं।

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।

दीर्घं न आयुः प्रति तुभ्यं बलिहृतः स्याम्।। अथर्व. 12.1.62

अर्थ-(पृथिवी) हे पृथ्वी! (ते) तेरी (उपस्थाः) गोदें (अस्मभ्यम्) हमारे लिए (अनमीवाः) नीरोग और (अयक्ष्माः) राज लोग रहित (प्रसूताः) उत्पन्न (सन्तु) होवें। (नः) अपने (आयुः) आयु को (दीर्घम्) दीर्घकाल तक (प्रतिबुध्यमाना) जगाते हुए•(वयम्) हम (तुभ्यम्) तेरे लिए (बलिहृतः) बलि देने वाले (स्याम्) होवें।

सूक्त के अन्तिम मंत्र में पृथ्वी को पुनः माता के नाम से संबोधित किया है।

भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।

पृथ्वी से ओषधियों को खोदते समय भी हमें इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि उसका समूलोच्छेदन न हो जाए।

मा नो रिषत्खनिता यस्मै चाह खनामि वः।

द्विपत्चतुष्पद स्कामं सर्वमस्त्वनातुरं।। ऋ. 10.97.20

अर्थ-(वः खनितामारिषत्) तुम्हें खोदने वाला स्वयं पीड़ित न हो। (खनिता वः मा रिषत्) खोदने वाला भी तुम्हारा समूलोच्छेद न करे। (यस्मै च अहं वः खनामि समारिषत्) जिस के आरोग्य के लिए मैं तुम्हें खोदता हूँ वह पीड़ित न हो (अस्माकम्द्विपत् चतुष्पत्) हमारे मनुष्य और पशु (सर्वम्) सभी प्राणी वर्ग (अनातुरम् अस्तु) रोग रहित हो।

पृष्ठ 8 का शेष-स्वामी गंगागिरी जनता...

कुमार वर्मा जी, डॉ. रवेल सिंह, डॉ. कुलदीप सिंह दीप तथा डॉ. रविन्द्र कुमार जी विशेष रूप से उपस्थिति हुए।

डॉ. सतीश कुमार जी ने नाट्य-मंच भी चार पीढ़ियां तथा देश-विदेश के नाट्य-मंच, लोक-नाट्य तथा चार वेदों के बारे में जानकारी दी। डॉ. रवेल सिंह तथा डॉ. कुलदीप सिंह दीप ने बताया कि किस प्रकार से बाहरी दिखावे से रहित नुक्कड़ नाटक हमारी सामाजिक समस्याओं का हल निकालते हैं। डॉ. रविन्दर कुमार ने नाट्य कला के बारे में जानकारी दी। विभिन्न कॉलेजों से पहुंचे डैलीगेट्स ने भी अलग-अलग विषयों पर अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये। इस अवसर पर कॉलेज की प्रबन्धकीय कमेटी के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी, जनरल सैक्रेटरी श्री राजेन्दर कौड़ा जी, श्री के. के धीर जी, प्रिंसीपल श्रीमती सरला सग्गड़ जी, डॉ. दविन्दर जोशी जी, डॉ. सोमपाल हीरा जी, तथा पंजाबी विभाग की अध्यक्ष डॉ. रविन्दर कौर जी, डॉ. जसप्रीत गुलाटी, प्रो. संदीप कौर, प्रो. मनप्रीत कौर, सं. कुलजीत सिंह तथा मनजिंदर सिंह जी उपस्थित थे। कान्फ्रेंस की समाप्ति पर श्री रमेश कौड़ा जी ने सबका धन्यवाद किया।

राजेन्द्र कौड़ा जनरल सैक्रेटरी

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

पृष्ठ 2 का शेष-दिव्य मातृत्व से ही दिव्य...

उदाहरण हैं। जिन्होंने सन्तान निर्माण का आदर्श प्रस्तुत कर धन्यता और अमरता प्राप्त की है।

नारी नर का निर्माण करे।

मनु, व्यास, कृष्ण, राम जैसे पुत्रों को जने।

नारी गुण का आधान करे, प्रताप, शिवा, गोविन्द बने।

महाभारत का उदाहरण हमारे सामने है। वीर अभिमन्यु की माँ सुभद्रा अपने पति अर्जुन से चक्रव्यूह भेदन का ज्ञान प्राप्त करते-करते सो गई। परिणामत: बालक अभिमन्यु का शिक्षण अधूरा रहा और वह चक्रव्यूह से बाहर न निकल सकने के कारण पराजित हुआ। इतिहास साक्षी है कि शिवाजी महाराज ने राजमाता जीजाबाई के गर्भकाल से ही शिक्षण दिया था। उनका उद्देश्य था कि वह बालक गो-ब्राह्मण प्रतिपालक एवं हिन्दू राष्ट्र का पुनरूत्थान करने वाला बने। इसलिए उन्होंने बालक शिवाजी के चरित्र का निर्माण करने वाला संस्कारप्रद वातावरण गर्भकाल से ही उपलब्ध कराया। संत ज्ञानेश्वर की माँ ने भी अनेक कष्ट सहकर राष्ट्रीय स्वाभिमान का एवं भक्ति से परिपूर्ण बालक का निर्माण किया और समाज हिताय समर्पित कर दिया। 'चिन्ता करितो विश्वाची' यह वाक्य कहने वाला बालक नारायण की माँ सूर्य की उपासना करती थी। सूर्या के उपासक माता राणुबाई ने सूर्यसम दिव्य, तेजस्वी, विश्व की चिन्ता करने वाले सुपुत्र को जन्म दिया। यही बालक स्वामी रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कहने का तात्पर्य है कि ऐसे अनेक उदाहरण हमारे इतिहास के पृष्ठों में छिपे हैं, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि माता के प्रत्यनों के परिणामस्वरूप संतान भी वैसी ही निर्मित हुई, जैसा वह चाहती थी।

माँ मार्गदर्शक होती है। वह जैसा चित्र बालक के मानस पर अंकित करती है, बालक वैसा ही बनता है। एक बार बातों-बातों में बालक नरेन्द्र ने कह दिया कि मैं तो कोचवान बनूँगा। ममतामयी माँ ने तुरन्त स्थिति को संभालकर कहा ठीक है। तुम कोचवान ही बनना परन्तु श्रीकृष्ण जैसे। इतना कहकर उन्होंने अर्जुन का रथ हाँकते श्रीकृष्ण का चित्र दिखाया। हम देखते हैं कि स्वामी विवेकानन्द के रूप में जाना जाने वाला यह बालक हिन्दुत्व चिन्तन का सारथी बना और उसकी गूँज को विश्व गगन में फैला दिया।

हर महान व्यक्तित्व के पीछे एक माँ छिपी है और छिपा है उसका ममत्व। श्रेष्ठ सन्तति के निर्माण हेतु माता का संस्कारित होना देश की आवश्यकता है। इसलिए आज बालिकाओं की शिक्षा इस प्रकार की हो या विचार होना चाहिए। उसके मन में स्त्रीत्व के प्रति हीन भावना न हो। उसे अपने नारी होने पर गर्व हो तथा वह स्वयं कन्या के प्रति जाग्रत हुई अनावस्था को दूर कर उसमें भावी माता के संस्कारों को भरने के प्रति सजग बने।

आज की माताओं को विचारना है कि उसे कैसा साहित्य पढ़ना होगा, घर का वातावरण कैसा हो। उसके मन हृदय में वर्तमान परिस्थिति के अनुसार भव्य दिव्य राष्ट्र की परिकल्पना एवं भक्ति कैसा जागृत हो? तभी वह भावी नागरिक को धर्मभिमुख कर्तव्य तत्पर एवं राष्ट्र के प्रति सजग बना सकती है। खाओ, पीओ, मस्त रहो। यह अपने देश की संस्कृति में नहीं है। अपनी संस्कृति में पर के लिए अर्थात् समाज, राष्ट्र, परिवार के लिए जीने की अवधारणा है। मातृत्व का यह केवल आज श्रृंगार भोग-विलास के मार्ग से प्राप्त हुआ जीवन का प्रसंग नहीं है, अपितु समझ-बूझकर स्वयं स्वीकारा हुआ एक महान पवित्रतम क्षण है। यह सच है कि कौशल्या केवल रानी होती और भोग-विलास में मस्त रहकर संतान को जन्म देती तो संतान राम न बनकर कुछ और होती। श्रीराम माता कौशल्या के संस्कारों का प्रतिफल है। हमारे देश की माताओं को भोगवादी संस्कृति से दूर रहना होगा। एक रोटी को बाँटकर खाने की प्रेरणा माँ ही अन्त:करण में जाग्रत करती है। जब यहाँ के नागरिक भोगवाद से दूर रहकर, आर्यत्व को जीवन में उतार कर, स्वार्थ विहीन, भ्रष्टाचारमुक्त, दिव्य, तेजस्वी राष्ट्र के निर्माण में क्षमतावान बनेंगे तो देश समुन्नत होगा। यही दिव्य भाव माँ के हृदय में चाहिए। दिव्य मातृत्व, दिव्य नागिरक निर्माण करेगा और नागरिक निर्माण करेंगे समुन्नत राष्ट्र।

देवियाँ देश की जाग जाये अगर। युग स्वयं ही बदलता चला जायेगा।।

रावनवमी पर्व मनाया

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में दिनांक 25-03-2018 (रविवार) को राम जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें प्रि. कैलाश चन्द्र शर्मा और प्रो. यशपाल वालिया यजमान बने। तत्पश्चात् राम नवमी के उपलक्ष में एक विशेष कार्यक्रम चला। श्रीमती विमला भाटिया और कुमारी सुकीर्ति भाटिया ने मर्यादा पुरूषोत्तम राम चन्द्र जी के जीवन को भजनों के माध्यम से जागृत किया। राम का समूचा जीवन भारत के लिये ही नहीं अपितु उस समय की समस्त मानव जातियों के लिए एक आदर्श स्थापित करने वाली बात बन गई, आज भी बड़े ही आदर और श्रद्धा से भारत में और बाहर देशों में राम को याद किया जाता है और रामायण को गाया जाता है। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए मुख्य उदबोधन में प्रि. कैलाश चन्द्र शर्मा ने कहा कि अपने समय के पथ प्रदर्शक और युग पुरुष राम ने पिछड़ी जन जातियों को मुख्य धारा में जोड़ने और उन्हें सुसंस्कृत बनाने में महती काम किया। रावण पर राम की विजय इसी धर्म युद्ध का परिचायक है। आज समय की मांग है कि समूचा समाज भेट भाव को मिटा कर समाज के और राष्ट्र के उत्थान के लिए कार्य करे और भारत को फिर से विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त कराये। यही राजा राम की सच्ची शिक्षा है। अंत में सभी उपस्थित आर्यजनों ने मिल बैठे ऋषि प्रसाद का आनंद माना।

-जगदीश भाटिया वरिष्ठ उप प्रधान

आर्य समाज जण्डियाला गुरू का चुनाव

आर्य समाज जण्डियाला गुरू जिला अमृतसर का चुनाव रविवार को श्री योगराज महाजन जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारी चुने गए-:संरक्षक-श्री योगराज महाजन, प्रधान-श्री कमल कुमार, उपप्रधान-श्री डा. राजेश महाजन, महामन्त्री- श्री स्वतन्त्र कुमार, उपमन्त्री- श्री वीरेन्द्र भोला, कोषाध्यक्ष-श्री प्रदीप कुमार, पुस्कालयाध्यक्ष- श्री राज कमार, निरीक्षक-श्री राजीव कुमार, सभा प्रतिनिधि-श्री जवाहर लाल, श्री स्वतन्त्र कुमार, प्रचार मन्त्री- श्री सुधीर कुमार।

स्वतन्त्र कुमार महामन्त्री आर्य समाज

भजन सन्ध्या का आयोजन

आर्य समाज जण्डियाला गुरू जिला अमृतसर में भावी पीढ़ी के निर्माण हेतू, अच्छे संस्कारों को जाग्रत करने, सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वास, पाखण्ड के उन्मूलन हेतू भव्य भजन संध्या का आयोजन 22 अप्रैल 2018 दिन रविवार को दोपहर 2:00 से 5:00 बजे तक किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सुमधुर भजनोपदेशक संगीतरत्न श्री जगत वर्मा जी अपने आध्यात्मिक, राष्ट्रभक्ति के सुमधुर भजन प्रस्तुत करेंगे। आप सभी से निवेदन है कि सपरिवार इष्टमित्रों सहितपहुँच कर भजनों को सुने और धर्म लाभ उठावें।

स्वतन्त्र कुमार महामन्त्री आर्य समाज

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

आर्य समाज मंदिर पटियाला में ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौक पटियाला में सात दिवसीय ऋग्वेद परायण महायज्ञ के समापन अवसर पर आहुतियां प्रदान करते हुये आर्य जन। जबकि चित्र दो में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री विनोद भारद्वाज जी एवं अधिष्ठाता साहित्य विभाग श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी प्रिंसीपल संतोष गोयल जी को सम्मानित करते हुये जबकि चित्र तीन में उपस्थित जनसमूह।

आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौक पटियाला में सात दिवसीय ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन 3 अप्रैल से 8 अप्रैल तक किया गया। इस कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री विनोद भारद्वाज जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं विशेष अतिथि श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब विशेष तौर पर पधारे। अपने सम्बोधन में उन्होंने महर्षि दयानन्द को याद किया और कहा कि वेद मार्ग पर चलते हुये आर्य समाज ने देश की आजादी में कई शान्तिमय आन्दोलन किये हैं पर कभी भी देश की सम्पत्ति का किसी भी तरह का कोई नुक्सान नहीं किया है। देश और समाज की उन्नति केवल वेद मार्ग पर चल कर ही संभव है। उन्होंने विशेष रूप से आर्य समाज पटियाला की पूरी टीम के वेद प्रचार सहित सभी कार्यों की भूरि भूरि प्रशंसा की। इससे पहले कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व के सर्वश्रेष्ठ कर्म वैदिक यज्ञ के साथ किया गया। आर्य समाज के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने विश्व के कल्याण की मंगल कामनाएं करते हुये यज्ञ अग्नि में आहूतियां प्रदान की। इस सात दिवसीय ऋग्वेद पारायण महायज्ञ में बतौर यज्ञ ब्रह्मा एवं प्रमुख प्रवक्ता आचार्य हरि शंकर अग्निहोत्री ने कहा कि संसार को समझने के लिये ज्ञान की आवश्यकता है और ज्ञान के रूप में सृष्टि के सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद में उपलब्ध हैं। प्रमाण, परम्परा, तर्क व विवेचन से यह सिद्ध होता है कि चारों वेदों का ज्ञान सृष्टि की आदि में चार ऋषियों को ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है। इस बारे में गहन स्वाध्याय व अध्ययन न करने वालों को अनेक प्रकार की भ्रान्तियां है। यदि वह इसका अध्ययन करें तो उनकी सभी शंकाओं व भ्रान्तियों का निवारण हो सकता है। महर्षि दयानन्द जी जो वेद में बताये गये मार्ग अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है उनका जीवन सुखमय बना रहता है। कार्यक्रम के संयोजक बिजेन्द्र शास्त्री एवं प्रधान राज कुमार सिंगला ने विभिन्न आर्य समाजों आर्य समाज राजपुरा, समाना, सरहिन्द, सन्नौर, नाभा, सैक्टर 22 चण्डीगढ, संगरूर से पधारे सभी अतिथियों का शाल भेंट कर स्वागत किया। आर्य समाज के प्रधान राज कुमार सिंगला ने बताया कि इस समाज में साल में दो बार पूरे सप्ताह तक चलने वाले कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। सभी का धन्यवाद प्रकट किया। मुख्य अतिथि तथा विशेष अतिथि को शाल और स्मृति चिन्ह भेंट किये। प्रधान राज कुमार सिंगला ने आर्य समाज को 21000-21000 रुपये दान देने पर डा. सुनील आर्य, डा. संजय सिंगला का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर प्रिंसीपल एस.आर. प्रभाकर एवं प्रिसीपल विवेक तिवारी को आर्य समाज में हिस्सा लेने के लिये विशेष तौर पर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में पधारे प्रसिद्ध भजनोपदेशक दिनेश पथिक जी ने अपने प्रभु भक्ति एवं देश भक्ति के मधुर भजनों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर वीरेन्द्र सिंगला, वेद प्रकाश तुली, जितेन्द्र शर्मा, डा. सुनील आर्य, डा. संजय सिंगला, आनन्द मोहन सेठी, प्रवीण कुमार आर्य, डा. ओम देव आर्य, प्रवीण चौधरी, रमेश गंडोत्रा, के.के. मोदगिल, गुलाब सिंह, राजेश कौल, डा. रमण वर्मा, यशपाल जुनेजा, अरुण आर्य, सुरेन्द्र शास्त्री प्रिंसीपल संतोष गोयल, प्रेम लता सिंगला, संगीता सिंगला, वैजयन्ती माला सेठी, सरिता आर्य, नरेश बाला आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। सत्संग के समापन पर सात दिन तक ऋषि लंगार वितरित किया गया।

-बिजेन्द्र शास्त्री

स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कालेज रायकोट में हवन यज्ञ का आयोजन

सत्र 2017-18 के समापन पर स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कालेज रायकोट में हवन यज्ञ का आयोजन कर छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की गई। जबकि चित्र दो में कालेज में पधारी डा. कनु थिंड एस.डी.एम. रायकोट को आर्य समाज का साहित्य देकर सम्मानित करते हुये प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी एवं अन्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा संचालित लुधियाना जिले की प्रथम नैक मूल्यांकित सुदृढ़ शैक्षणिक संस्था स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज कालेज रायकोट के प्रांगण में दिनांक 7 अप्रैल 2018 को पावन हवन यज्ञ समारोह का आयोजन किया गया। लुधियाना से पधारे श्री बाल कृष्ण शास्त्री जी के सुयोग्य निर्देशन में पावन मंत्रों के उच्चारण के साथ यज्ञ कुंड में ज्योति प्रज्ज्वलित करके छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की गई।

इस अवसर पर कालेज प्रबन्ध कमेटी के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी, जनरल सैक्रेटरी श्री राजेन्द्र कौड़ा जी, उप प्रधान श्री प्रेम नाथ गोयल, सदस्य श्री परविन्द्र गोयल, श्री स.जसवन्त सिंह, प्रिंसीपल श्रीमती सरला सगगड, मैडम हरजीत कौर जी, समूह स्टाफ, छात्राएं एवं अन्य गणमान्य सज्जन उपस्थित थे। हवन में उच्चारित पावन मंत्रो ने सारे वातावरण को सुगन्धिमय एवं पावन बना दिया। हवन यज्ञ समारोह के सम्पन्न होने पर कालेज प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी ने कालेज के श्रेष्ठ परिणामों, खेल कूद में प्राप्त हुई उपलब्धियों तथा यूथ फेस्टिबल में प्राप्त हुई उपलब्धियों की चर्चा करते हुये नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया तथा उन्हें इन सबके लिये बधाई दी। अंत में श्री रमेश कौड़ा जी ने शास्त्री जी एवं हवन यज्ञ मे पहुंचे सभी गणमान्य सज्जनों का हार्दिक धन्यवाद किया। इससे पूर्व एक अन्य कार्यक्रम में ग्रामीण क्षेत्र की जानी-मानी शैक्षणिक संस्था स्वामी गंगागिरी जनता गर्ल्ज़ कॉलेज, रायकोट में राष्ट्रीय कान्फ्रेंस करवाई गई। इस कान्फ्रेंस का मुख्य विषय 'पंजाबी नाट मंच के ग्लोबली सरोकार' था। यह कान्फ्रेंस कॉलेज-प्रबंधक कमेटी के प्रधान श्री रमेश कौड़ा जी तथा प्रिंसीपल मैडम सरला सरगड़ जी के सुयोग्य निर्देशन में सम्पन्न हुई। इस कान्फ्रेंस में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंची डॉ. नीलम शर्मा जी (प्रिंसीपल, एल. बी. एस., कॉलेज, बरनाला) को पुष्प-गुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया गया। इस अवसर पर मेहमान के रूप में नाटकार रंग कर्मी अभिनेता डॉ. सतीश (**शेष पृष्ठ 6 पर**)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।